क परिवर्तन के लिए तैयारी।

- क्या हम किसी परिवर्तन का ठीक से सामना करने की तैयारी कर सकते हैं?
- हाँ, हम तैयारी कर सकते हैं–हालांकि हम विशिष्ट परिवर्तनों का सामना करते समय विफल हो सकते हैं, क्योंकि हम सिद्ध नहीं हैं।
- महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर के साथ एक दैनिक संबंध बनाये रखें। इस तरह, हम विश्वास और साहस के साथ परिवर्तन का सामना कर सकेंगे। हम हर परिस्थिती या परीक्षा में परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए तैयार होंगे।

ख शादी के लिए तैयारी।

- विवाह एक पुरुष और एक महिला को एक एकल इकाई में साथ लाता है। वह रिश्ता हमारे माता-पिता या किसी और के साथ रिश्ते से ज्यादा मजबूत होता है, लेकिन उन्हें खारिज नहीं करता है।
- अगले अंशों का अध्ययन करें और अपने भविष्य के साथी के बारे में अपने आप से अगले प्रश्न पूछें। क्या आप भी भविष्य के साथी के रूप में इस परीक्षा को पास करेंगे?
  - नीतिवचन २४:३०-३४ - क्या वह परिश्रमी है?
  - नीतिवचन २२:२४-२५ - क्या वह चिड़चिड़ी है?
  - २ कुरिन्थियों ६:१४-१५ - क्या आपका विश्वास एक है?
  - नीतिवचन ११:१४ - मेरे परिवार और दोस्तों को क्या लगता है?
  - नीतिवचन ३:५-६ - क्या मैं अपनी भावनाओं में बह रहा हूँ?

ग माता-पिता बनने की तैयारी।

- बच्चे का जन्म माता-पिता के लिए एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। खुशी, जिम्मेदारी, चिंता ...
- बाइबल के अनुसार, हम माता-पिता बनने की तैयारी कैसे कर सकते हैं?
  - १ शमूएल १:२७। बच्चे के गर्भ धारण करने से पहले हमेशा उसके लिए प्रार्थना करें।
  - न्यायियों १३:७। गर्भावस्था के दौरान आहार और स्वास्थ्य का ध्यान रखें, और प्रसव के बाद इसे बंद न करें।
  - लूका १:६। पाप से दूर रहें।
  - लूका १:४१। पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन माँगें।
  - लूका १:४६-४७। नए जीवन के उपहार के लिए परमेश्वर का शुक्र करें।
  - लूका १:७६। आपका मुख्य लक्ष्य होना चाहिए कि आपके बच्चे का पालन-पोषण इस तरह से हो कि वह परमेश्वर का एक सच्चा बेटा या बेटी बन जाए।

घ बुढ़ापे की तैयारी।

- युवावस्था के दौरान ही बुढ़ापे की तैयारी शुरू हो जाती है।
- युवावस्था और प्रौढ़ता के दौरान डाली गईं आदतों का हमारे वृद्धावस्था को जीने के तरीके पर प्रभाव पड़ता है।
- भजन संहिता ७१ के अनुसार, हम बुढ़ापे की तैयारी कैसे कर सकते हैं?
  - व्यक्तिगत और गहराई से परमेश्वर को जानना (पद्य १-७)
  - अच्छी आदतें डालना:

— परमेश्वर में विश्वास रखना (पद्य ३), स्तुति करना (पद्य ६), आशा रखना (पद्य १४)

— महान कार्य के लिए जोश होना (पद्य १५-१८)

ण मौत की तैयारी।

- ❖ मृत्यु हर इंसान के लिए अनिवार्य है, जब तक कि दूसरा आगमन न हो (उत्पत्ति ३:१९)।
- ❖ कोई भी अचानक मौत के लिए तैयार नहीं हो सकता (खुद की या तो प्रिय जन की)। मृत्यु को स्वीकार करना कठिन है, भले ही हम इसकी उम्मीद कर रहे हों।
- ❖ फिर भी, हम बिना किसी डर के इसका इंतजार कर सकते हैं, अगर हम लगातार मसीह की धार्मिकता से ढके हैं (रोमियों ४:७)।
- ❖ जब दाऊद मौत के करीब था, उसने सुनिश्चित किया कि वह सबसे अच्छी विरासत छोड़ रहा है: अपने पुत्र को परमेश्वर के मार्ग पर चलने की सलाह देना (१ राजाओं २:१-३)।
- ❖ याद रखें कि यीशु ने मृत्यु पर विजय पाई है (१ कुरिन्थियों १५:५४-५५)।